पाकिस्तान का परमाणु बम

दृश्य 1.

चगाई – 28 मई – समय : दोपहर के साढ़े बारह बजे ।

10–9–8–7–6–5–4–3–2–1–0. कान पर उंगली रखो । बम फूटने वाला है ।

“फिस्सssssस” ।

“लाहौल बिलाकुवत ! ये कंबख्त तो टांय टांय फिस्स हो गया ”।

“सर ये चीनी पुराने धोखेबाज हैं । पहले इंडिया पर 62 में पीठ पर वार किया । हमें भी ससुरों ने पिछली दीपावली का गड्डा थमा दिया ”।

“बेवकूफ कहीं के, गड्डों को धूप दिखाई थी की नहीं ”।

“दिखाई थी सर । 11 मई से 28 मई तक धूप ही तो दिखा रहे थे । अब भी नहीं फूटे तो जरूर जनरल जिया की राह देख रहे होंगे ”।

“पैकेट से दूसरा बम निकालो ”।

फिर गिनती शुरू हुयी ।

10–9–8–7–6–5–4–3–2–1–0 . कान पर उंगली रखो । खुदा ने चाहा तो अबकी बार जरूर फूटेगा ”।

“फिस्स्स्स्सssssssससssssस”।

“ये भी पहले वाले की तरह कब्र में पैर लटका कर बैठा था ”।

“ब्रिगेडियर अल्ला रक्खां, बांस से हिला कर देखो, बत्ती सुलग रही है या ये भी गया ”।

“सर इसकी तो बत्ती ही नहीं है ”।

“अच्छा संभाल कर रख दो । चिन–चिनचूं को वापस कर देंगे । उसने कहा था जो न फूटे वापस कर दियो ”।

इस तरह हमारे पारंपरिक पट्टीदार पाकिस्तान ने चार बम, आणविक बम थे शायद, नवाज शरीफ तो यही कहते हैं, फुस्स कर दिये । पांचवा धीरे से फटा ।

“फट्ट” ।

“मुबारक हो, मुबारक हो ”।
“आप को भी बहुत बहुत मुबारक”।
तभी एक साइंसदान दौड़ते हुये आया ।
“हुजूर कंप्यूटर 8 किलोटन बताता है । इंडिया का 45 किलोटन का था ”।
“कोई बात नहीं, तुम कहो हमारा 35 किलोटन का था ”।
“आप कहें तो इसको हाइड्रोजन बम कहलवा दें ”।
“नहीं पहली बार में नहीं । चीनी बवाल कर देंगे । हाइड्रोजन बम मंहगा आता है । परमाणु बम का पैसा दिया था । हाइड्रोजन बम कहेंगे तो चीनी हाइड्रोजन बम का चार्ज लगा देंगे ”।
“जी हुजूर, वैसे खबर मिली है कि अमेरिका और यूरोपीय देशों ने हम पर भी प्रतिबंध लगा दिया है । अब हमें घास की रोटियां खानी पड़ेगी । मेरी घरवाली ने तो आज घास की रोटी और घास की सब्जी भी भेजी है । अभी से आदत डाल लें तो अच्छा है ” ।
“आज बेनजीर के मरहूम बाप जिंदा होते तो कित्ते खुश होते । कहते थे हम हिंदुस्तान से हजारों साल तक घास खाकर भी लड़ेंगे ”।
“ जी सर । आज हम घास खाने जा रहे हैं । आज से हर पाकिस्तानी हरी और ताजी घास खायेगा और ताजा गोबर करेगा । घास कम पड़ेगी तो आयात करवा लेंगे ”।
“बिल्कुल आज हिंदुस्तान हमसे कित्ता पीछे रह गया । वहाँ का आम आदमी घास नहीं खा पाता है । सारा चारा भूसा वहाँ के नेता खा जाते हैं ”।

दृश्यः 2

संसद का दृश्य । लोक सभा चल रही है ।
माकपा सदस्य – “हम पूछते हैं क्या जरूरत थी आपको बम फोड़ने की । हमारे दुश्मन पड़ोसी को नाराज कर दिया न । अब भारत के साथ पांचवा युद्ध कौन करेगा ”।
द्रमुक सदस्य – “युद्ध कितना कारगर होता है, देश की जनसंख्या कम होती है । लोगों का ध्यान भुखमरी, बेरोजगारी, अकाल, सूखा से हट कर युद्ध पर चला जाता है । नेता लोग अब चैन की सांस भी नहीं ले सकते हैं ”।

जनता दल सदस्य – “बम फोड़ने की अभी क्या जरूरत थी । जब पाकिस्तान हम पर हमला कर देता, आधा भारत जीत लेता, तब पाकिस्तान अधिकृत राजस्थान में अपनी रक्षा के लिये परमाणू बम फोड़ते ”।

कांग्रेसी – “अरे भाई ये गाँधी का देश है । यहाँ बम की क्या जरूरत है और अगर किसी ने हमारे ऊपर बम दाग भी दिया तो हम उसके खिलाफ असहयोग आंदोलन कर देंगे ”।

सपाई 1– “ये सब वोट की राजनीति है । सत्ता पक्ष देश भर में उन्मांद का वातावरण तैयार कर रहा है, जिससे सांप्रदायिक दंगे हो सके । ये बम फोड़कर कार सेवा करना चाहते हैं । हम मंदिर निर्माण नहीं होने देंगे ”।

सपाई 2 –“बम तो हमारे कार्यकाल में ही बन गया था, इन्होंने फोड़ दिया तो कौन सा बड़ा तीर मार लिया । चावल, दाल, हल्दी, नमक कूकर पर चढ़ाया हमने । इधर रसोई से क्या हटे खिचड़ी तुम्हारी हो गई ”।

मित्रों, एक पाकिस्तानी हैं जो कि देश के लिये घास तक खाने को तैयार हैं । एक हमारे देश के नेता हैं जो कि बम पर राजनीति कर रहे हैं । बम के श्रेय के लिये झगड़ रहे हैं । मैं बम की खिलाफत करने वालों से पूछता हूँ कि क्या 11 मई 1999 के पहले तक भारत या पाकिस्तान के पास परमाणू बम नहीं थे । 11 मई 1999 के पहले भी तो पाकिस्तान परमाणू हमले की धमकी देता था । अगर हमने अपने हथियार अधिक धारदार और पैने कर लिये हैं तो इससे हमारी सुरक्षा की गारंटी बढ़ जाती है, कम नहीं हो जाती है । कुछ लोग कहते हैं कि इससे रक्षा खर्च में बेहिसाब बढ़ोत्तरी होगी । लेकिन हमारी परमाणू नीति तो भारत की आजादी के साथ ही अस्तित्व में आ गई थी । नेहरू इसके प्रबल पक्षधर थे । परमाणू शक्ति पर अनुसंधान के लिये हर साल अलग से ही बजट आवंटित किया जाता है । खर्च पर सवाल खड़ा करने वाले ध्यान दें तो उन्हें पता चलेगा कि दो तीन साल में एक बार तो ऐसा होता ही है कि भारतीय सेना को आवंटित धन पूरा खर्च न होने पर केंद्र सरकार को वापस हो चला जाता है । माना एक मिराज 2000 की कीमत 250 करोड़ रूपये होती है और इतनी धन राशि में कई दर्जन गांवों में पानी और सड़कों का इंतजाम किया जा सकता है पर देश की सुरक्षा पर कोई आंच न आये ये भी तो जरूरी है । इंदिरा गाँधी ने पोखरन में पहला परमाणू परीक्षण कर के 1974 में अमेरिका द्वारा दी गई परमाणू बम की धमकी का जोरदार जवाब दिया था । आज हम विश्व की छठी परमाणू ताकत है । ये फक्र करने की बात है मातम मनाने की नहीं । आज

हमारे दोनों दुश्मन पड़ोसी परमाणू हथियारों से लैस हैं । कम से कम परमाणू शक्ति संपन्न होने पर कोई हमें परमाणू बम की धमकी तो नहीं देगा । एक ताकतवर देश ही आर्थिक और सैन्य महा शक्ति बनता है । इस दुनिया में आज भी जंगल का कानून चलता है और जंगली जानवरों से रक्षा के लिये हथियार रखना पाप नहीं है ।